कंकाल बना पक्षी प्रजनन में रोड़ा

एटकिन्स डाइट भले ही हॉलीवुड स्टार्स के लिए ठीक हो लेकिन न्यूज़ीलैण्ड में पाई जाने वाली दुनिया की सबसे बड़ी और विलुप्तप्राय चिड़िया के जीवन को सुरक्षित रखने के लिए नाकाफी है। कैकापो नामक इस चिड़िया की संख्या कम होते-होते मात्र 91 रह गई है। इसके संरक्षण के लिए प्रयासरत लोग अभी तक इसके भोजन में हाई-प्रोटीन पोषण का अधिकतम उपयोग इस आशा में कर रहे थे कि इनकी वर्तमान संख्या को बढ़ाया जा सकेगा। लेकिन बाद में उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने गलत पोषक तत्व चुने थे।

उड़ने में अक्षम न्यूज़ीलैण्ड की यह भारी भरकम चिड़िया वहां के स्थानीय रीमू वृक्ष के फल का पोषण पाकर ही प्रजनन करती है। लेकिन समस्या यह है कि ये वृक्ष तीन-चार वर्षों में एक बार फलते हैं। जब इन वृक्षों पर फल नहीं लगते उन वर्षों में वैज्ञानिक इस चिड़िया को प्रोटीन का पोषण देते थे क्योंकि मान्यता थी कि इनके प्रजनन के लिए प्रोटीन महत्वपूर्ण है।

प्रजनन कार्यक्रमों की असफलता का कारण पता लगाने के लिए ऑकलैण्ड के मैसी विश्वविद्यालय के पोषण इको- लॉजिस्ट डेविड रॉबेनहाइमर ने पूरक पोषक आहार और रीमू के फलों में शामिल तत्वों का तुलनात्मक अध्ययन किया। पता चला कि पूरक आहार में प्रोटीन अधिक और कैल्शियम कम है जबकि रीमू में इसके उलट होता है।

इस अध्ययन से प्रजनन न हो पाने के कारणों को ढूंढ़ने में मदद मिलेगी। रॉबेनहाइमर बताते हैं कि हड्डियों के विकास के लिए कैल्शियम अत्यावश्यक तत्व है और कैकापो का कंकाल ज़रूरत से ज़्यादा ही बड़ा है। पूरक आहार तो उन्हें प्रोटीन की अतिरिक्त मात्रा ही उपलब्ध करा रहा है जबकि जंतु बहुत अधिक प्रोटीन नहीं पचा सकते। ऐसे में पर्याप्त कैल्शियम के अभाव में कैकापो ने और भोजन का सेवन ही बंद कर दिया होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***